© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 04 , Issue : 13 | October – December 2017

भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी साहित्य

प्रोमिला, Net Qualified 2016

भूमिका :–

इक्कीसवीं सदी में समय समाज, संस्कृति, देश और भाषा में परिवर्तन आ रहा है। परन्तु इसमें घबराने की आवश्यकता नहीं है। परिवर्तन युग की मांग है। इस परिवर्तन का अन्य एक नाम है भूमंडलीकरण अर्थात ग्लोबलाइजेशन। आज यह शब्द अपेक्षाकृत नया और काफी प्रचलन में आया शब्द है। इसे हिन्दी के साथ जोड़कर अक्सर सुना जाता है। हिन्दी भाषा और साहित्य पर इसका प्रभाव गहरा है। भूमंडलीकरण हिन्दी साहित्य जगत को रूपायित किया है। इस सन्दर्भ में ग्लोबल होती हिन्दी साहित्य पर चर्चा अनिवार्य है।

ISSN : 2348-5612 © URR

मूल शब्द :–

भूमण्डीलकरण, हिन्दी साहित्य

ऑनलाईन हिन्दी साहित्य :–

आज हिन्दी साहित्य सूचना क्रांति, सैटेलाइट क्रांति, डिजिटल क्रांति के संपर्क से भूमण्डलीकरण या वैश्वीकरण का लाभ उठा रहा है। इसका स्पष्ट प्रमाण है इंटरनेट में हिन्दी साहित्य की लोकप्रियता। इंटरनेट पर आज हिन्दी के नाटक, कहानी, उपन्यास के साथ–साथ हिन्दी साहित्यकार एवं महापुरूषों की जीवनियाँ, भेंटवार्ताएं आदि भी उपलब्ध है। इसके साथ ही प्रकाशकों ने अपनी–अपनी वेबसाईट बना रखी है जिसके द्वारा ही अनेक रचनाकरों की महत्वपूर्ण पुस्तकें पाठकों को घर बैठे मिल जाती हैं। आज ई–संस्करण की सुविधा से हिन्दी के कई पुस्तकें पाठकों को अपने काम और रूचि के अनुसार चयन कर सकते हैं। हिन्दी के अनुक पत्रिकाओं का ई–संस्करण जारी किए हैं। तदनुसार आज 'हंस', 'वागार्थ', 'कथादेश,' तद्भव', 'नया ज्ञानोदय', 'मधुमति' और 'वाडमय' जैसे पत्रिकाएं इंटरनेट पर उपलब्ध है। साथ ही प्राचीन काल से लेकर अर्वाचीन काल तक के श्रेष्ठ हिन्दी साहित्य के एक लाख पृष्ठ इंटरनेट पर डाले जा रहे हैं, ताकि देश–विदेश के हिन्दी प्रेमी घर बैठे पुस्तकों को पढ़ सकें। भक्तिकालीन कवि तुलसी कृत 'रामचरितमानस' अब डिजिटल रूप में इंटरनेट पर उपलब्ध है। इस प्रकार कबीर, रहीम, सूर, प्रेमचन्द, भारतेंदु हरिशचन्द्र, रामचन्द्र शुक्ल और समकालीन हिन्दी साहित्यकारों के रचनाएं भी इंटरनेट में उपलब्ध है। महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की सहायता से हिन्दी का संपूर्ण श्रेष्ठ साहित्य को कम्प्यूटर पर उपलब्ध कराया है। यह हिन्दी समय वेब पर देखा जा सकेगा। आजकल स्वतंत्र अभिव्यक्ति के लिए ब्लॉग एक महत्वपूर्ण साधन बन चुका है। बहुत सी हिन्दी साहित्यकार इसका इस्तेमाल कर सकते हैं। इस प्रकार 'फेसबुक', 'व्हाट्सएप्प' जैसे सोशल मीडिया में भी हिन्दी साहित्यकार सक्रिय है। आज विभिन्न भाषाओं की कृतियाँ हिन्दी में और हिन्दी कृतियाँ विदेशी भाषाओं में अनुदित होकर उपलब्ध हो रही है। साथ ही ये रचनायें इंटरनेट में भी उपलब्ध है। जे.के. रॉलिंग कृत हैरी पॉटर, चेतन भगत की रचनाऐं, प्रेमचन्द, हज़ारी प्रसाद द्विवेदी की रचनाऐं भी अनुवाद के सशक्त उदाहरण है। अतः भाषिक वैश्वीकरण में अनुवाद का स्थान महत्वपूर्ण है।

ऑफलाइन हिन्दी साहित्य :

ऑफलाइन हिन्दी साहित्य का मतलब सामान्य हिन्दी साहित्य से है। टेक्नोलॉजी और विज्ञान ने हिन्दी के इस साहित्य रूप को भी विस्तार करके उसे एक नूतन स्वरूप प्रदान कर दिया है। आज हिन्दी साहित्य पर भूमंडलीकरण का सशक्त प्रभाव दृष्टव्य है। अब हिन्दी के साथ अंग्रेजी और सामान्य बोलचाल की भाषा का मिश्रण आम बात हो गयी है। अतः हिन्दी साहित्य भी नई वाली हिन्दी का स्वरूप ग्रहण किया है। इस नई वाली हिन्दी ने अंग्रेजी पाठकों को भी हिन्दी की ओर आकर्षित किया है और साथ ही हिन्दी में बोलने, लिखने और पढ़ने में गर्व का अनुभव महसूस कराते हैं। हिन्दी साहित्य के विभिन्न विधाओं में भूमंडलीकरण का असर प्रकट है। हिन्दी कविता में वैश्वीकरण और बाजारवाद के प्रभाव को रेखांकित किया गया है। बाजार के विविध रूप और दृश्यों जैसे – शेयर बाजार, संवेदी सूचकांक, मुद्रास्फीति, तेल की कीमतें, महाजनी पूंजी, विज्ञापन, विश्वबैंक, टेलीविज़न, कम्प्यूटर, उपभोक्तावाद, उद्योग, पर्यावरणस, बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ, मीडिया, मुनाफा, भ्रष्टाचार, दुकान, रिश्वत, व्यवहार, नये अर्थशास्त्रीय सिद्धांत, किसानों की आत्महत्याएं आदि सम्बन्धी सूचनाएं एवं संकेत आते हैं। बाजार आज की कविता का मुख्य बीज शब्द के रूप में बदल गया है। बाजार जिस तरह से दिखता है, उसी प्रकार का नहीं होता। यहां चमत्कारों के उत्पादन का सबसे बड़ा व्यापार होता है। इस व्यापार से कवि मंगलेश डबराल मनुष्य की आत्मीयता, प्रेम, सुख तथा शांति को बचाना चाहता

है। उसकी 'बाज़ार' शीर्षक कविता मीड़िया की प्रभुता में जमे बाज़ार के नकलीपन का पर्दाफाश करती है। कवि कहते हैं कि – जिस तरह दिखता है :–

वह उस तरह नहीं होता
यह बाज़ार का एक
ठोस आध्यात्मिक आधार है
इसलिए चमक्तारों का
उतपादन सबसे बड़ा व्यापार है
मसलन शांति नाम का यह
आरामदेह सोफा लीजिए
जिसके बीच में रखने के लिए
यह पारदर्शी मेज़ है
बैठने के कुछ ही बाद
प्रकट होता है एक शांत विचार और
सुख की नींद के लिए तो यह
बिस्तर मशदूर ही है
जिसकी विज्ञापन करते हुए
कई सुंदरियाँ बूढ़ी हो चली है।

हिन्दी कवियों ने भूमंडलीकरण पर भयावह दृष्टिकोण से बार–बार चिंता प्रकट की है। हिन्दी कहानी साहित्य से भी भूमण्डलीयकरण का प्रभाव प्रकट है। राजेश जैन की कहानी 'क्यू में खड़ी उदासी' बहुराष्ट्र कंपनियों में काम करने वाले युवा लोगों के धीरे–धीरे रोबोट बनते चले जाने का और मानवीय संवेदनाओं से कटते जाने का सबसे अच्छा उदाहरण है। इस प्रकार एकान्त श्रीवास्तव ने अपनी कहानी 'लड़की और आम' में बाज़ारवादी वैश्विक जीवन का वर्णन किया है। गीत चतुर्वेदी की कहानी 'सिमसिम' में आज हिन्दी भाषा पर होने वाला भूमण्डलीकरण का सशक्त प्रभाव दृष्टव्य है। उदाहरण के रूप में इस कहानी के कुछ अंश प्रस्तुत करना चाहता हूँ – "सामने कम्प्यूटर पर जीमेल खुला हुआ है। उसके ऊपर गूगल टॉक की विंडो खुली हुई है और रह रह कर चमक रही है। उस तरफ से किसी 'मेरा नाम जॉकर का सन्देश आया है – wru ? वह आखिरी सन्देश है। उसके ऊपर मे जो शायद लड़की है, की तरफ से भेजा गया सन्देश है – m not cnfm.jst waitn.waitn, waitn :-(मेरी हिम्मत नहीं होती कि मैं कम्प्यूटर की तरफ देखूँ। कविता, कहानी की भांति उपन्यास साहित्य में भी आज भूमण्डलीयकरण सशक्त रूप से विद्यमान है। प्रदीप, सौरभ, अलका सरावगी जैसे रचनाकारों ने अपने उपन्यासों में भूमण्डलीकरण सशक्त रूप से विद्यमान है। प्रदीप, सौरभ, अलका सरावगी जैसे रचनाकारों ने अपने उपन्यासों में भूमण्डलीकरण का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है। प्रदीप, सौरभ का 'मुन्नी मोबाइल' और अलकासरावगी का 'एक ब्रेक के बाद' उपन्यासों में भूमण्डलीय व्यापार जगत, मोबाइल, क्रान्ति, इंडिया की इकोनॉमी कल्चर, मल्टीनेशनल कंपनियों के दिग्गज प्रबंधन अधिकारियों, विकास की द्रुत गति, समकालीन कला बाज़ार (आर्ट मार्किट), नयी पीढ़ी और उसकी यौनिक स्वतन्त्रता आदि पर केन्द्रित है। इस प्रकार हिन्दी साहित्य के अन्य विधाओं में भी भूमंडलीकरण का सशक्त प्रभाव दृष्टिगत होते हैं।

अब हिन्दी और हिन्दी साहित्य वर्चुअल वल्ड में अपना अस्तित्व में स्थिरता लायी है। हिन्दी साहित्य को वैश्विक बनाने के लिए यह बहुत आवश्यक है कि आज के लेखक वर्तमान समय की सच्चाईयों और प्रवृत्तियों को पहचानकर और परिणतियों को समझकर रचना करें।

सन्दर्भ :–

1. संग्रथन, अंक : 9 वर्ष : 28, मार्च : 2015, पृष्ठ : 50 से उद्दत
2. गीत चतुर्वेदी, सिमसिम, प्रगतिशील वसुधा, कहानी विशेषांक – 1, पृष्ठ – 314, 2008–2009